International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 11-10-2024, Accepted: 10-11-2024, Published: 24-11-2024
Volume 6, Issue 2, 2024, Page No. 20-21

वैज्ञानिक भाषा के रूप में हिंदी भाषा का स्वरूप

खुशबू
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
हिंदी भाषा की विकास यात्रा प्राचीन भारतीय आर्य भाषा संस्कृत (वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत) से होती हुई मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा (पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश) से विकास की ओर बढ़ते–बढ़ते आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं तक आकर पहुँचती है, जिसमें वर्तमान में 5 उपभाषायें और 18 बोलियाँ शामिल हैं। इन सभी उपभाषाओं एवं बोलियों को हिन्दी के व्यापक अर्थ के रूप में लिया जाता है। आदिकाल में पद्य (दोहा, कवित्त, छप्पय आदि) के रूप विकसित हुई हिंदी भाषा आधुनिक काल में गद्य–पद्य दोनों के रूप में आगे बढ़ते–बढ़ते वर्तमान में विज्ञान, तकनीक, जनसंचार की एक सशक्त भाषा के रूप में हिंदी ने अपना विकास कियाहै। वर्तमान में हिंदी के महत्त्व का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता हैं कि हमारे देश में हर वर्ष 14 सितंबर को राष्ट्रीय हिंदी दिवस एवं हर वर्ष 10 जनवरी को अंतरराष्ट्रीय हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसे विश्व हिन्दी दिवस भी कहते हैं। इस दिन को मनाने का मकसद हिन्दी भाषा को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देना है। आज हिंदी भारत की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है।

मूल शब्दः आर्य भाषा संस्कृत, वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, उपभाषायें, बोलियाँ

बदलते समय में हुए परिवर्तन के साथ हिंदी भाषा ने अपना स्वरूप बदला है। आज विश्व में लगभग 3000 भाषाएँ बोली जाती हैं, जबकि भारत में ही 453 भाषाएँ बोली जाती हैं, जिनमें से 22 भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है और अनुच्छेद 343 से 351में हिंदी भाषा के विकास से जुड़े प्रावधान शामिल हैं। जब वैज्ञानिक भाषा की बात की जाती है तो उससे अभिप्राय होता है किसी भाषा की उत्पत्ति, उसकी बनावट, संरचना, उसके व्याकरण की रूपरेखा। हिंदी भाषा भी हमारे सामने एक वैज्ञानिक भाषा के रूप में मौजूद है, हिन्दी के वैज्ञानिक स्वरूप का विकास भी काफ़ी पुराना है। हिंदी भाषा के विज्ञान को लेकर श्री प्रसाद ने कहा है – ''हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है। यह जिस प्रकार बोली जाती है, उसी प्रकार लिखी जाती है। इसके उच्चारण व लिखावट में जितनी समानता है, उतनी किसी अन्य भाषा में नहीं। इसमें अंग्रेजी व अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द भी घुल मिल गये हैं।'' वैज्ञानिक होने से कोई भी भाषा अधिक सुसंगत और सटीक होती है।

डॉ. सत्य प्रकाश सरस्वती के अनुसार, ''महान प्रश्नों के विषय में उत्सुकता ही वैज्ञानिक भावना है और यह जिज्ञासा की ओर ले जाती है।'' किसी भी भाषा के वैज्ञानिक होने से उसका प्रभाव, महत्त्व एवं विश्वसनीयता बढ़ती है, उसका उपयोग हर क्षेत्र में आसानी से किया जा सके उसमें ऐसी सुगमता आ जाती है।

हिंदी भाषा में ये सभी गुण मौजूद हैं एवं अन्य भी बहुत सारे गुण है, जिसके कारण हिंदी भाषा को वैज्ञानिक भाषा कहा जा सकता है।

भाषा के बिना तथ्यों, भावों, विचारों को व्यक्त नहीं किया जा सकता। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषा दो रूप में होती है। प्राकृत भाषा (वह भाषा है जो स्वाभाविक रूप में होती है) और कृत्रिम भाषा (जिसको विज्ञान की भाषा कहते हैं।) किसी भी भाषा का वैज्ञानिक पक्ष जितना ही सुनिश्चित होता है, वह भाषा को उतना ही विश्वसनीय और व्यवस्थित बनाता है।

बीते कुछ वर्षों में इंटरनेट, वैश्वीकरण के दौर ने, संचार में सूचना क्रांति प्रौद्योगिकी के विकास ने विश्व के अनेक देशों के बीच की दूरी को लगभग खत्म ही कर दिया है। आज फ़ोन एवं कम्प्यूटर पर सिर्फ़ एक क्लिक से हम देश के किसी कोने में बैठकर विश्व के किसी कोने की जानकारी बहुत ही आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे में हिंदी भाषा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

आज विज्ञान का दौर है। आज परिवार से लेकर समाज, समाज से राष्ट्र, राष्ट्र से संपूर्ण विश्व हर जगह विज्ञान है। "विज्ञान को घटनाओं के कारणों की खोज माना जा सकता है।'' अभी तक विज्ञान के क्षेत्र में अंग्रेजी भाषा का ही वर्चस्व रहा है, लेकिन अब हिंदी भाषा भी इस क्षेत्र में आगे बढ़ रही है।

आज हिंदी भाषा में विज्ञान, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लेखन कार्य आरंभ हो चुका है। स्नातक, परास्नातक, उच्च शिक्षा के लिए भी विज्ञान, प्रौद्योगिकी में लेखन कार्य हो रहा है। जहां पहले हिंदी टाइप करने के लिए फॉन्ट उपलब्ध नहीं थे, आज मोबाइल, कंप्यूटर एवं प्रौद्योगिकी के अन्य साधनों में भी सरलता से हिंदी भाषा का प्रयोग हो रहा है। आज हिंदी भाषा में लगभग 350 पत्र पत्रिकाएं, विभिन्न शिक्षण संस्थानों में, शोध संस्थानों में प्रकाशित हो रहे हैं। विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी भाषा का विकास और अधिक हो सके। उसके लिए हमें विज्ञान से जुड़े ऐसे विषयों को पाठक वर्ग के सामने रखना होगा, जिसमें रोचकता हो, लोकप्रियता हो, जिससे उनका ज्ञानवर्धन हो।इस तरह से हिंदी भाषा का और अधिक विकास हो पायेगा।

आज कंप्यूटर ने बड़ी ही तेजी से हिंदी के स्वरूप को विकसित किया है।इसमें नागरी (देवनागरी अक्षरों) को भी शामिल किया गया है। आज नागरी के फॉन्ट भी कंप्यूटर में मौजूद है जिससे हिंदी भाषा हर क्षेत्र में उपलब्ध हो गई है। विभिन्न क्षेत्रों में अब हिंदी टाइपिंग से जुड़ी जरूरतों को आसानी से पूरा किया जा रहा है।

अब हिंदी भाषा सोशल मीडिया, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, जनसंचार, सिनेमा में, वाणिज्य में, प्रशासन, विधि, सरकारी दफ्तरों में हर जगह आसानी से उपलब्ध है, फ़ोन एवं कंप्यूटर के माध्यम से बात करना, प्रिंट, टाइपिंगकरना सब आसान हो गया है। आज हिंदी भाषा में अनेकों पुस्तकें छप रही है। आज दूसरी भाषाओं की पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद हो रहा है। हिंदी का पाठक वर्ग बढ़ रहा है।

आज हिंदी सिर्फ भारत तक की सीमित नहीं है बल्कि हिंदी एक विश्वस्तर की भाषा बन गई है। आज हमारे प्रधानमंत्री यूएनओ में हिंदी में अपनी बात रखते हैं। हमारी हिंदी फिल्में आज पूरे विश्व में देखी जा रहीं हैं और कमाई के नए–नए रिकॉर्ड बना रहीं हैं।

आज दूसरे देशों के लोग हिंदी भाषा सीख रहें हैं, भारत में आकर हिंदी भाषा पर अध्ययन कर रहें हैं, यानी हिंदी का विश्व में महत्त्व बढ़ रहा है। कहा जा सकता है कि आज हिंदी विश्व की भाषा बन गई है।

इंटरनेट के प्रभाव से ई–कॉमर्स, ई–मेल, एसएमएस, ब्लॉगिंग आज हर क्षेत्र में हिंदी भाषा उपलब्ध है। हिंदी साहित्य से जुड़ी घटनाएँ, हिंदी का साहित्य, हिंदी की पाठ्य सामग्री सब आज इंटरनेट पर मौजूद है। सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन करने में सक्षम है। आज कुर्ती देव, मंगल फॉन्ट और यूनिकोड के प्रयोग से हिंदी भाषा आसानी से टाइप एवं प्रिंट करने के लिए उपलब्ध है। आज सोशल साइट व अन्य प्लेटफार्म पर हम आसानी से अपनी बात को हिंदी में लिख सकते हैं। आज हिंदी में ऑनलाइन पाठ्यक्रम कोचिंग लाइब्रेरी, एनसीईआरटी की सामग्री विभिन्न विषयों पर लेख सब हिंदी में मौजूद है। आज गूगल ट्रांसलेटर किसी भी भाषा को हिंदी में रूपांतरित करने में सक्षम है जिससे हमें किसी अन्य भाषा में कही गई बात को समझने के लिए किसी दूसरे व्यक्ति पर निर्भर नहीं होना पड़ता गूगल ट्रांसलेट के माध्यम से हम खुद जान सकते हैं कि सामने वाला व्यक्ति क्या कहना चाहता है। आज हम सिर्फ़ मुँह से कुछ भी बोलकर उसको हिंदी में टाइप कर सकते हैं।आज किसी भी भाषा का हिंदी में और हिंदी का किसी अन्य भाषा में अनुवाद करना बहुत आसान हो गया है।

अभी कुछ वर्षों पहले फोन या कंप्यूटर पर हिंदी टाइप करना एक बहुत ही बड़ी समस्या होती थी। आज सब कुछ बस कुछ मिनट में ही संभव हो गया है। आज विज्ञान में तकनीकी के प्रभाव के कारण इंजीनियरिंग, विज्ञान की पुस्तक, विधि की पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद होकर हमारे सामने उपलब्ध हैं। भारत की राजभाषा बनने के बाद हिंदी का महत्व इसकी उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है। अब सरकारी कार्यों, विज्ञान टेक्नोलॉजी और प्रौद्योगिकीके कारण हिंदी के स्वरूप का विस्तार हुआ है। ऐसे में इन क्षेत्रों में भी हिंदी का विकास हुआ है। आज दूरसंचार, अंतरिक्ष विज्ञान, भौतिकी, शासन, रसायन शास्त्र में भी हिंदी भाषा मौजूद है। इन सभी में हिंदी भाषा की जरूरतों को पूरा करने के लिए तकनीकी शब्दावली के निर्माण का जरूरत महसूस हुई। जिसके कारण हिंदी की तकनीकी शब्दावली का निर्माण हुआ। इसके साथ साथ पत्रकारिता, प्रशासन, वाणिज्य, व्यवसाय आदि से जुड़ी पारिभाषिक शब्दावली तथा अनुवाद का पुनर्गठन एक जरूरत बनकर उभरा जिससे हिंदी का स्वरूप बदला और हमें हिंदी का वह रूप मिला जो आज हमारे सामने है।

संस्कृत के श्लोकों से होते हुए आज खड़ी बोली के रूप में मौजूद हिंदी हमारे देश की राजभाषा है एवं हिंदी को आदिकाल से लेकर आज वह जिस रूप में हमारे सामने मौजूद है, उसके लिए काफ़ी लंबा संघर्ष करना पड़ा है। चाहे वह आधुनिक काल में हिंदी और उर्दू का संघर्ष हो, चाहे हिंदी को राजभाषा के रूप में स्थापित करने का संघर्ष हो, यहाँ तक आने और हिंदी को वैज्ञानिक भाषा का स्वरूप प्राप्त करने में लगातार संघर्ष करना पड़ा है।आज विकासशील देश, विकसित देश बनना चाहते हैं, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव पूरी दुनियाँ पर हावी है।होमी जहांगीर भाभा ने कहा हैरू ''विज्ञान को समाज में जीवन्त और ऊर्जस्वी शक्ति के रूप में स्थापित करने की समस्या औद्योगिक रूप में अविकसित देश को विकसित देश में बदलने की समस्या का अविभाज्य अंग है।''

आज हम कह सकते हैं कि हिंदी भाषाजनसंचार, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, पत्रकारिता, वाणिज्यऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां हिंदी मौजूद नहीं है। आज शिक्षा विभाग, सरकारी दफ्तरों, बैंकों, अन्य संस्थाओं सभी में हिंदी भाषामें कार्य हो रहें हैं।आज हिंदी जिस स्थान पर मौजूद है, वहां आने में एक लंबा इंतजार वह एक लंबा सफर तय करना पड़ा है, तब जाकर हिंदी ने अपना वैज्ञानिक स्वरूप प्राप्त किया है जो आज इतना लोकप्रिय हुआ है। हिंदी के महत्त्व और प्रभाव अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है तो वहीं 14 सितंबर को हर वर्ष राष्ट्रीय हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

आज का समय जिसमें वैश्वीकरण, आधुनिकता सभी पर हावी है। हर देश किसी न किसी तरीके से पूरी दुनियाँ पर, सभी देशों पर अपनी संस्कृति, भाषा, व्यापार के माध्यम से अपनी शिक्षा, खोज, विज्ञान के माध्यम से प्रभाव जमाना चाहते हैं। ऐसे में हमारी भी जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि हम भी अपनी भाषा और अपनी संस्कृ ति पर गर्व करें। आज जहां पाश्चात्य सभ्यता सभी जगह हावी है, अंग्रेज़ी भाषा एक अलग ही स्तर पर लोकप्रिय है। ऐसे में हिंदी भाषा अपने स्वरूप को तभी बचाकर रख पायेगी। जब हम हिंदी भाषा के महत्त्व को समझेंगे और इसका गर्व के साथ प्रयोग करेंगे। आज हमारे सामने ऐसे बहुत से देशों के उदाहरण हैं जिन्होंने अपने देश की भाषा को प्राथमिकता दी है व अन्य भाषाओं जैसे अंग्रेज़ी के प्रभाव से अपने देश को बचाया है। अंग्रेज़ी या फ़िर किसी भी दूसरी भाषा को जानना, सीखना ग़लत नहीं हैं लेकिन अपनी भाषा को बोलने में शर्म महसूस करना व दूसरी भाषा को बोलने में गर्व करना यह स्थिति किसी भी देश के लिए सही नहीं हैं। आज हमारी हिंदी वैज्ञानिक भाषा के रूप में हमारे सामने है, अब हिंदी का स्वरूप बदला है आज की हिंदी नए ज़माने की हिंदी है। जिसमें सभी क्षेत्रों में प्रयोग होने वाले शब्द चाहे, चिकित्सा, विज्ञान, वाणिज्य, प्रशासन कुछ भी हो तकनीकी और परिभाषिक शब्दावली के माध्यम से हिंदी सभी की ज़रूरतों को पूरा करने में सक्षम है। आज हिंदी भाषा हमारे सामने अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बनकर, भारत की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है। जिसपर हर हिंदी भाषी को गर्व होना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ. रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव, भाषा शिक्षण, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली
2. 'प्राचीन भारत की वैज्ञानिक भावना'में ग्रन्थ ''आर्ष विज्ञान, पृ. –45
3. आधुनिक जीव विज्ञान, डॉ रमेश गुप्ता, पृ–116
4. वचन विचार,– संडे मेल (21 27 मार्च, 1993), पृ–2